July 08, 2024
Monday

पाठ ⇒

पतंग

(आलोक धन्वा)

प्रश्न: 1 'सबसे तेज बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर: 1 प्रकृति में परिवर्तन निरंतर होता रहता है जब तेज बौछारें अर्थात् बरसात का मौसम चला गया, भादों के महीने की गर्मी भी चली गयी, इसके बाद अश्विन का महीना शुरू हो जाता है इस महीने में अनेक परिवर्तन आते हैं। वह निम्नलिखित हैं :—

(i) खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा होने लग गया।

(ii) पुलों के पार करता हुआ शरद आ गया।

(iii) अपनी नयी चमकने वाली साइकिलों को तेज चलाते हुए ज़ोर-ज़ोर से घंटी बजाते हुए और चमकीले इशारों से एक दूसरे को बुला कर पतंग उड़ाने वाले बच्चों के समूहों के निकलने का मौसम आ गया।

प्रश्न: 2 सोचकर बताएँ कि पतंग के लिए सबसे हल्की और रंगीन चीज़, सबसे पतला कागज,

सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया है ?

उत्तर : 2 कवि ने पतंग के लिए अनेक विशेषणों का प्रयोग किया है, पतंग का निर्माण रंगीन कागज से होता है, इंद्रधनुष के समान यह अनेक रंगों की होती है। इसका कागज इतना पतला होता है कि बूँद लगते ही फट जाता है, यह बाँस की पतली कमानी से बनती है। कवि इनके माध्यम से बाल-सुलभ चेष्टाओं का अंकन करता है, पतंग भी बच्चों के मन की तरह कल्पनाशील, कोमल व हल्की होती है।

प्रश्न : 3 जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास — कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है ?

उत्तर : 3 कपास से बच्चों का गहरा संबंध है, दोनों में काफी समानताएँ हैं, रुई जैसे सफेद होते हैं वैसे ही बच्चे भी सफेद अर्थात् गोरे होते हैं, रुई की तरह ही बच्चे भी कोमल और मुलायम होते हैं, कपास के रेशे की तरह ही उनकी भावनाएँ होती हैं, वास्तव में बच्चों की कोमल भावनाओं का और उनकी मासूमियत का प्रतीक होता है।

प्रश्न : 4 पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं — बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है ?

उत्तर:4 जिस तरह पतंग ऊपर और ऊपर उठती जाती है, ठीक उसी तरह बच्चों की आशाएँ भी बढ़ती जाती हैं पतंगों के साथ-साथ उनकी भावनाएँ भी उड़ती जाती हैं; अर्थात् उनके मन में नयी-नयी इच्छाएँ और उमंगें आती हैं, वे भी आसमान की अनंत ऊँचाई तक पहुँच जाना चाहते हैं, ताकि अपनी हर इच्छा पूरी कर सकें।

निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ कर प्रश्नों का उत्तर दीजि

छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते

प्रश्न: दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने से तात्पर्य बच्चों का दौड़-दौड़कर शोर मचने से है. बच्चे जब पतंग उड़ाते हैं, तो वे बेफिक्र होकर छतों पर भी दौड़-दौड़कर शोर मचाते हैं.

प्रश्न: जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए क्या आपको छत कठोर लगती है?

उत्तर: जब पतंग सामने हो तो छतों पर दौड़ते हुए हमें छत की कठोरता का आभास नहीं होता उस समय यदि हमें किसी प्रकार का कष्ट भी हो तो हम उसे भी भूल जाते हैं।

प्रश्न: खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद आप दुनिया की चुनौतियों के सामने स्वयं को कैसा महसूस करते हैं?

चतुर

उत्तर: परिस्थितियाँ मनुष्य को निपुण बनाती है संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं वे सभी खतरनाक परिस्थितियों से होकर गुज़रे हुए होते हैं, ऐसी परिस्थितियों के बाद उसके मन का भय निकल जाता है और जीवन में आने वाली छोटी-छोटी चुनौतियों को सहज ही महसूस करते हैं।

15/7/24

theboardstudy.com